भगवद् गीता का ज्ञान – (10)

" नरक के तीन द्वार – काम, क्रोध और लोभ "

श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के 16वें अध्याय के 21वें और 22वें श्लोकों में भगवान् श्रीकृष्ण काम, क्रोध और लोभ के बारे में अर्जुन के माध्यम से प्राणी-मात्र को इस प्रकार समझाते हैं –

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥१६:२१॥

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ॥१६:२२॥

अर्थात - "काम, क्रोध और लोभ -- नरक के ये तीन अलग-अलग द्वार हैं, जो आत्मा का नाश (पतन) करने वाले होते हैं; इसलिए इन तीनों को त्याग देना चाहिए।" **(गीता – 16:21)**

"हे कुंती-पुत्र अर्जुन! नरक के इन तीनों द्वारों से मुक्त पुरुष अपने कल्याण का आचरण करता है; उससे वह परम गति को जाता है, अर्थात परमेश्वर को प्राप्त हो जाता है।" **(गीता – 16:22)**